Inspira- Journal of Modern Management & Entrepreneurship (JMME)
ISSN : 2231–167X, Impact Factor: 7.866, Volume 15, No. 02, April-June 2025, pp. 177-184

# लोक की वाणी, नारी की चेतनाः मैथिली और भोजपुरी लोकगीतों में स्त्री अनुभव का तुलनात्मक विश्लेषण

नीलम झा*
डॉ. रितु शर्मा**

**सार**

*यह लेख मैथिली और भोजपुरी लोकगीतों के माध्यम से नारी चेतना के उद्भव, स्वरूप और विकास का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता है। इन गीतों में स्त्रियाँ केवल सांस्कृतिक पात्र नहीं, बल्कि सामाजिक अनुभूतियों, प्रतिरोधों और भावनात्मक अनुभवों की संवाहक हैं। लेख चार भागों में विभाजित है: पहले भाग में लोकगीतों की प्रकृति और स्त्री स्वरूप की पड़ताल की गई है; दूसरे भाग में विवाह, मातृत्व और पारिवारिक संदर्भों में स्त्री–अनुभव की विवेचना की गई है; तीसरे भाग में प्रतिरोध के स्वर और नारीवादी दृष्टिकोण से पुनर्पाठ किया गया है; तथा अंतिम भाग में समकालीन संदर्भ में इन गीतों की भूमिका और तुलनात्मक स्वरूप का विश्लेषण प्रस्तुत है। इस अध्ययन से स्पष्ट होता है कि जहाँ मैथिली लोकगीत अधिक सांस्कृतिक सलीके और कोमल प्रतिरोध की शैली में स्त्री अनुभव को उकेरते हैं, वहीं भोजपुरी लोकगीत अधिक संघर्षशील, प्रवासी और मुखर चेतना को व्यक्त करते हैं। डिजिटल युग में भी यह चेतना विलुप्त नहीं हुई है, बल्कि नया रूप लेकर उभरी है। यह आलेख लोक साहित्य में स्त्री अध्ययन की समकालीन आवश्यकता की ओर संकेत करता है और यह तर्क रखता है कि लोकगीत मात्र सांस्कृतिक परंपरा नहीं, अपितु स्त्री–स्वर की जीवंत राजनीतिक और सामाजिक उपस्थिति हैं।*

***शब्दकोशः*** *नारी चेतना, मैथिली लोकगीत, भोजपुरी लोकगीत, तुलनात्मक लोक साहित्य, लोक सांस्कृतिक विमर्श, स्त्री अनुभव, नारीवादी दृष्टिकोण, प्रतिरोध, समकालीन लोकधारा, महिला सशक्तिकरण।*

## प्रस्तावना

### लोक परंपरा और स्त्री की वाणी एक ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

भारतीय लोकसंस्कृति में लोकगीत केवल मनोरंजन का माध्यम नहीं, बल्कि सामाजिक चेतना, भावनात्मक अनुभव और सामूहिक स्मृति के संप्रेषण का सशक्त उपकरण रहे हैं। विशेष रूप से भोजपुरी और मैथिली लोकगीतों में स्त्रियों की भूमिका दोहरी रही है। एक ओर वे इन गीतों की रचयिता, गायिका और संरक्षिका रही हैं, तो दूसरी ओर उनके अनुभव, संघर्ष और संवेदनाएं इन गीतों के मूल स्वर को आकार देती रही हैं। यह द्वंद्वात्मक उपस्थिति ही लोकगीतों को जीवंत बनाती है।

* शोधार्थी, कला, मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान संकाय, निर्वाण विश्वविद्यालय जयपुर, राजस्थान।
** सह आचार्य, कला, मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान संकाय, निर्वाण विश्वविद्यालय जयपुर, राजस्थान।

भारतीय लोकपरंपरा की आत्मा लोकगीतों में बसती है, और इन गीतों की सबसे मुखर और भावनात्मक आवाज़ नारी की रही है। मैथिली और भोजपुरी जैसी भाषाओं के लोक में यह भूमिका और भी अधिक गहन है। यहाँ स्त्री केवल गीत की गायिका नहीं है वह रचनाकार है, संवेदनाओं की वाहक है और सामाजिक चेतना की सूत्रधार भी। परंतु यह समझना आवश्यक है कि यह स्त्री चेतना किसी एक युग का प्रस्फुटन नहीं, बल्कि एक ऐतिहासिक परंपरा में विकसित होती चेतना है, जो मौखिकता, अनुष्ठान, स्मृति और अनुभव से पोषित हुई है।

## लोकगीतों की उत्पत्ति और स्त्री भागीदारी

भारत की सभ्यताओं में जब लिपि का विकास नहीं हुआ था, तब भी स्त्रियाँ अपने अनुभवों को ध्वनि और स्वर के माध्यम से व्यक्त करती थीं। स्त्रियों की पीड़ा, प्रेम, प्रसव, श्रम और उत्सव के अवसरों पर जन्मे गीत मौखिक परंपरा के रूप में प्रसारित हुए। इस परंपरा में मैथिली और भोजपुरी क्षेत्र की स्त्रियाँ अद्वितीय योगदानकर्ता रही हैं। विद्वान डॉ. सत्यनारायण झा (''भोजपुरी लोकसंस्कृति", 1995) के अनुसार, ''स्त्री का अनुभव जब समाज की पीठ पर बोझ बन जाता है, तब वह लोकगीत बनकर फूटता है।''

## मैथिली और भोजपुरी अंचलों की स्त्री–केन्द्रित लोक विधाएँ

मैथिली और भोजपुरी दोनों अंचल स्त्री जीवन की विविध अवस्थाओं को लेकर विविध विधाओं के गीतों से समृद्ध हैं:

- **गारी गीतः** जो विवाह के समय स्त्रियों द्वारा गाए जाते हैं, जिनमें वे सामाजिक असंतोष और परिहास के माध्यम से पितृसत्तात्मक सत्ता को चुनौती देती हैं।
- **सोहरः** जन्मोत्सव के गीत, जहाँ स्त्री माँ के रूप में स्वयं को देखती है और अपने अनुभव साझा करती है।
- **विदाई गीतः** विवाह के पश्चात जब बेटी को ससुराल भेजा जाता है, तो उसमें स्त्री जीवन के विस्थापन, दर्द और सामाजिक यथार्थ की झलक होती है।
- **कजरी और सावनी गीतः** जहाँ स्त्रियाँ ऋतु परिवर्तन और प्रेम की अनुभूतियों को बाँधती हैं।
- **बरहमासाः** वर्ष के बारह महीनों में प्रेम या प्रतीक्षा के अनुभवों को समेटने वाले गीत।

इन विधाओं की लोकप्रियता इस बात की गवाही देती है कि स्त्री जीवन के हर चरण को गीतों के माध्यम से अभिव्यक्त करने की सांस्कृतिक ललक इन समाजों में कितनी गहराई से रची–बसी रही है।

## प्राचीन और मध्यकालीन स्त्री स्वर

ऐतिहासिक दृष्टि से देखा जाए तो रामायण, महाभारत या पुराणों से इतर मिथिला क्षेत्र में विद्यापति जैसे कवि हुए, जिनकी रचनाओं में राधा या स्त्री स्वर बहुत सशक्त रहा। यद्यपि वे पुरुष कवि थे, किंतु उनकी शैली स्त्री की भावनात्मक दुनिया से जुड़ने की गहरी कोशिश थी।

विद्यापति की पदावली का एक अंश देखें

''कहि न सकहिं बिनु रोवन राधा, पिया बिसरल, कइसे रहब॥"

(संदर्भः विद्यापति पदावली संग्रह, सं. नरेन्द्र झा, 1963)

भोजपुरी अंचल में भी भिखारी ठाकुर जैसे लोकनाटककारों ने ''बिदेसिया", ''गबरघिचोर" जैसे नाटकों में स्त्री को एक ऐसी आवाज दी जो अपने पति की बेरुखी और समाज के अन्याय के खिलाफ मुखर थी। 'बिदेसिया' की नायिका के स्वर में जो पीड़ा है, वह कालजयी हैः

''पिया विदेशिया गेलन, छिनले सजनी के चैन।"

भिखारी ठाकुर की यह पंक्ति 1920 के दशक में भी स्त्री की उपेक्षा और मानसिक पीड़ा को उतनी ही मजबूती से रखती है जितनी आज।

### स्त्री मौखिकता और वंशानुगत परंपरा

एक विशेष बात यह है कि मैथिली और भोजपुरी लोकगीतों में अधिकतर गीत पीढ़ी–दर–पीढ़ी स्त्रियों के माध्यम से मौखिक रूप से प्रसारित हुए। दादी–नानी की गोद में बच्चियाँ जो सनससंइपमे सुनती थीं, वही कालांतर में उनकी चेतना का हिस्सा बन जाती थीं। डॉ. मधुरिमा झा (''मैथिली स्त्री लोकगीतों की परंपरा'', 2017) के अनुसार

''मिथिला में कोई स्त्री यदि विवाह के समय विदाई गीत न गा सके, तो उसकी सामाजिक परिपक्वता पर प्रश्न उठते थे।''

लोकगीतों की यह अनिवार्यता स्त्रियों को केवल गायक नहीं, संस्कृति की वाहक भी बनाती है।

### स्त्री अनुभव का सामाजिक पाठ

लोकगीत केवल भावनाओं के संप्रेषण का माध्यम नहीं हैं, वे सामाजिक पाठ भी हैं। इन गीतों के माध्यम से हम स्त्री जीवन की पारंपरिक सीमाओं, संघर्षों और आकांक्षाओं को पढ़ सकते हैं। उदाहरणस्वरूपः

''सासु कहे दृ रोटियां बेल, ननद कहे दृ पानी भर। ए बहू! तोरा कब मिलिहै चैन?''

(संग्रहः भोजपुरी लोकगीतों में नारी स्वर, डॉ. रवींद्रनाथ सिंह, 2009)

यह गीत उन अनदेखे कार्यों और भूमिकाओं को उजागर करता है जो स्त्रियाँ दिनभर निभाती हैं, फिर भी उन्हें श्रेय नहीं मिलता।

### स्त्री स्वर की बहुआयामी प्रकृति

इन गीतों में स्त्री केवल एक पीड़िता या वंचिता नहीं है वह जिज्ञासु है, आलोचक है, विद्रोही है और प्रेम की कवयित्री भी है। वह विरह में रोती है, पर साहस से लड़ती भी है।

किसी गीत में वह कहती हैः

''हम ना करब दहेज के बियाह, जियत–जियत देह जरी।''

(बिहार बालिका विद्रोह सम्मेलन, 2018)

तो किसी अन्य गीत मेंः

''बोल सखि! तोहके बिआह में का भेटाइल? एक कोठरी चुप्पी, दुई आँसू।''

(यह गीत लोकगाथाः स्त्री स्वर, सं. अर्चना राय, 2015 में दर्ज है)

इन दो गीतों से स्पष्ट होता है कि लोकगीतों में स्त्री केवल पीड़ा का विलाप नहीं करती, वह सामाजिक यथार्थ को सामने रखकर समाज से संवाद करती है।

मैथिली और भोजपुरी लोकगीतों की परंपरा में स्त्री चेतना का स्वर शताब्दियों से बह रहा है। यह स्वर कभी धीमा, कभी मुखर रहा है, लेकिन कभी विलुप्त नहीं हुआ। यह चेतना समय–समय पर नए रूपों में अभिव्यक्त होती रही है और अब 21वीं सदी की स्त्रियाँ उसे डिजिटल मंचों से लेकर विश्वविद्यालयों तक ला रही हैं।

पहला भाग इस ऐतिहासिक गाथा की आधारभूमि बनाता है। आगामी भागों में हम देखेंगे कि इन गीतों की भावभूमि में स्त्री अनुभव कैसे बदलते हैं, और किस प्रकार यह चेतना आज सामाजिक विमर्श का भी हिस्सा बनती जा रही है।

### अनुभव की भाषाः मैथिली और भोजपुरी लोकगीतों में स्त्री जीवन का चित्रण

लोकगीतों में नारी अनुभवों का चित्रण उस सामाजिक संरचना को उजागर करता है, जिसमें एक स्त्री का जन्म, उसका विकास, उसकी भूमिका और उसके अधिकार सब कुछ पूर्व निर्धारित हैं। फिर भी, इन गीतों में

नारी अपने अनुभवों को जिस संवेगात्मक और अर्थगर्भित शैली में प्रकट करती है, वह उसकी चेतना की परिपक्वता को दर्शाती है। मैथिली और भोजपुरी लोकगीतों में स्त्री जीवन की हर अवस्था को समेटा गया है बचपन से लेकर विवाह, गर्भधारण, मातृत्व, परित्याग और वृद्धावस्था तक।

**विवाह और विस्थापन का अनुभव**

विवाह स्त्री जीवन का सबसे बड़ा सामाजिक मोड़ है, और लोकगीतों में इसकी छाया गहरी है। मैथिली में गाए जाने वाले विदाई गीतों में वह दर्द स्पष्ट है जो एक लड़की को अपने मायके से जुदा करते हुए होता है।

''बाबा के आंगन छोड़ब, नइ हरसाइत हे। सखियन संगे खेलब, नइ हृदय रासाइत हे।''

(संग्रहः मिथिला की लोकवाणी, संपादकः रत्नेश मिश्रा, 2006)

भोजपुरी गीतों में यह स्वर कभी भावुक है, तो कभी तीव्र भी

''हमार बाबुल के आंगना ना भावे ससुरारी, काहे तू बिदेसिया बनवले पिया?''

(भिखारी ठाकुर, विदेसिया)

यहाँ स्त्री केवल प्रेमिका नहीं, एक सामाजिक इकाई है जिसे एक नई व्यवस्था में बिना उसकी मर्जी के सम्मिलित किया गया है। ये गीत शादी को स्त्री के लिए 'नैतिक जिम्मेदारी' से ज़्यादा एक भावनात्मक विस्थापन की तरह देखते हैं।

**मातृत्व और जननी की भूमिका**

सोहर गीतों में मातृत्व को लेकर दोहरे अनुभव मिलते हैं। जहाँ पुत्र जन्म पर उल्लास होता है, वहीं कुछ गीतों में कन्या जन्म को भी स्वीकार्यता मिलती है, विशेषकर नए दौर के लोकगीतों में।

''बेटी जनमल घर में लक्ष्मी अइली, सुघर सुरतिया से उजास भइली।''

(संकलनः भोजपुरी सोहर गीत, शारदा देवी, 2018)

यह दर्शाता है कि स्त्री अब केवल जननी नहीं, वह उस सत्ता की वाहक भी है जो सामाजिक परिवर्तनों को जन्म दे सकती है।

**श्रम और स्त्री का अदृश्य योगदान**

भोजपुरी अंचल में कृषि, पशुपालन और घरेलू श्रम में स्त्रियों की भागीदारी अत्यधिक रही है, परंतु लोकगीतों में कभी–कभी ही उनका श्रम प्रत्यक्ष रूप से स्थान पाता है। फिर भी कुछ गीत ऐसे हैं जो उनकी भूमिका को रेखांकित करते हैंः

''दूध दुहब हम, गोबर पाथब, अंगना झारब, चूल्हा तापब।"

(भोजपुरी कृषि गीत संग्रह, डॉ. प्रमिला सिंह, 2014)

यहाँ नारी अपने कार्यों की सूची प्रस्तुत करती है, जैसे वह समाज को उसका रिपोर्ट कार्ड दिखा रही हो। मैथिली लोकगीतों में भी गोधन पूजा या धान रोपनी के अवसर पर स्त्रियाँ अपने श्रम को गीतों में व्यक्त करती हैं।

**प्रेम, अधिकार और अभिव्यक्ति**

प्रेम गीतों में स्त्री का स्वर कई बार विद्रोही होता है। वह प्रेम को केवल पुरुष केंद्रित नहीं रहने देती, बल्कि अपनी शर्तों पर प्रेम चाहती है।

''पिया के बिनु रात नै कटै, हमहु चाही नेहिया के अधिकार।''

(मैथिली प्रेमगीत संग्रह, विद्युत झा, 2012)

यहाँ 'अधिकार' शब्द मात्र भावनात्मक नहीं है यह स्त्री के आत्मबोध का प्रतीक है।

**पितृसत्ता के विरुद्ध स्वर**

कुछ गीतों में स्पष्ट रूप से पितृसत्तात्मक सत्ता के विरोध में स्वर मुखर होते हैं। जैसेः

''दहेज में मांगेलस गाड़ी, हम देब छूट्टी के लाठी।''

(लोक विद्रोह गीत संग्रह, सविता राय, 2020)

ये गीत विवाह, दहेज, बाल–विवाह जैसी कुप्रथाओं पर स्पष्ट प्रश्न उठाते हैं। इसमें लोकगीत एक सामाजिक दस्तावेज की तरह कार्य करता है।

**स्त्री का विद्रोह और आत्मनिर्भरता**

वर्तमान समय में जब लड़कियाँ शिक्षा, नौकरी और स्वावलंबन की ओर बढ़ रही हैं, तो इन गीतों में उनकी नई पहचान भी उभरने लगी है।

''हमार बाबुल पढ़वलस हमके, अभी लेखपाल बन के रहब।''

(नया मैथिली जागरण गीत संग्रह, 2023)

यह स्त्री की आत्मनिर्भरता और स्वाभिमान का उत्सव है। यह वह स्त्री है जो अब न केवल अधिकार चाहती है, बल्कि उसे अर्जित भी करती है।

**प्रतिरोध और चेतना नारीवादी दृष्टिकोण से लोकगीतों का पुनर्पाठ**

भारतीय लोकपरंपरा में लोकगीतों का संबंध केवल रीति–रिवाज, उत्सव और भावनात्मक प्रसंगों तक सीमित नहीं रहा, बल्कि ये गीत स्त्री की चेतना, उसके प्रतिरोध और उसके अनुभवों को स्वर देने वाले जीवित दस्तावेज़ बन चुके हैं। मैथिली और भोजपुरी लोकगीतों में स्त्री ने जिस प्रकार अपने दुखों, आकांक्षाओं और विद्रोह को शब्द दिया है, वह उन्हें नारीवाद के महत्वपूर्ण स्रोतों में गिनाता है।

**व्यंग्य और प्रतिरोध की सूक्ष्म शक्ति**

पितृसत्तात्मक समाज में जहां प्रत्यक्ष टकराव स्त्रियों के लिए संभव नहीं था, वहां व्यंग्यात्मक लोकगीतों ने उन्हें संवाद और प्रतिरोध का एक गुप्त हथियार प्रदान किया। गारी गीत इसके सबसे प्रभावशाली उदाहरण हैं। इन गीतों में स्त्रियाँ हास्य और व्यंग्य के माध्यम से सामाजिक असमानताओं और पारिवारिक अत्याचारों पर प्रहार करती हैं।

''सासु मोर बड़ बैरी, कहे दिन में चार बेर, बेंगन के भरता पर करत बखेड़ा घनघोर।''

(स्रोतः मैथिली गारी गीत संकलन, सं. विद्यापति लोक संस्थान, 2009)

इस गीत में 'बेंगन के भरता' केवल भोजन नहीं, बल्कि घरेलू सत्ता का प्रतीक है, जिसे लेकर स्त्री संघर्ष करती है। गाने वाली स्त्री इस संघर्ष को हास्य में लपेटकर विरोध का साधन बना देती है।

भोजपुरी में भी 'कजरी' और 'फगुआ' जैसे उत्सवी गीतों में स्त्रियाँ पुरुषों की दमनकारी सोच पर तंज कसती हैं। जैसेः

''तोहार घर दुआर भले सोना के होई, हमके चाही मनवा के मोती।''

(भोजपुरी लोकगीतों में नारी स्वर, प्रो. मधु चौधरी, 2017)

यहाँ स्त्री केवल वैवाहिक संपन्नता नहीं, प्रेम, सम्मान और मनोवैज्ञानिक स्वतंत्रता की मांग करती है।

**विवाह संस्था की आलोचना और स्त्री की स्वायत्तता**

मैथिली और भोजपुरी दोनों भाषाओं के गीतों में विवाह संस्था के अंतर्गत स्त्री की स्थिति को लेकर गहरी असहजता अभिव्यक्त होती है। एक मैथिली गीत में नवविवाहिता कहती हैः

''सासु के डर, ननद के ताना, कखन सुतब मोर मन भाना?''

(संग्रहः मैथिली विवाह गीतों में स्त्री स्वभाव, डॉ. नीलिमा झा, 2011)

यहाँ शादी एक स्वप्न नहीं, एक निरंतर चुनौती बन जाता है। स्त्री के पास न कोई निजता है, न स्वतंत्रता। इस तरह के गीत एक प्रकार की सामाजिक आत्मालोचना हैं।

भोजपुरी गीतों में भी एक नवविवाहिता कहती है

''ए बाबुल मोर, तू हमके बिदेसिया के हाथ बेच देलू, नै पूछलू मन के बात।''

(भिखारी ठाकुर, बिदेसिया)

यहाँ 'बिदेसिया' प्रवासी पुरुष के रूप में केवल पति नहीं, बल्कि स्त्री की नियति बन गया है जिसमें उसकी सहमति का कोई स्थान नहीं।

**श्रम और अस्मिता का प्रश्न**

भोजपुरी लोकगीतों में स्त्री द्वारा किए जाने वाले श्रम को लेकर चेतना स्पष्ट है। वह स्वयं को केवल पत्नी या माँ नहीं, बल्कि श्रमशील इकाई मानती है, जिसकी उपेक्षा उसे स्वीकार नहीं।

''हमर मेहनत के भाव नइखे, भोर से संझा तक छाँह नइखे।''

(भोजपुरी लोकगीतों की नारी चेतना, सं. उर्मिला त्रिपाठी, 2015)

यह श्रम स्त्री की अस्मिता का आधार है और जब वह इसका मूल्य नहीं पाती, तो गीतों में प्रतिरोध मुखर हो उठता है।

**स्त्री, देवी, प्रतिरोधः धार्मिक प्रतीकों का पुनर्पाठ**

नारीवादी दृष्टिकोण से देखा जाए तो देवी गीतों में स्त्री एक दयालु, मातृवत, शांत प्रतिमा नहीं रहती। वह शक्ति, रक्षण और प्रतिशोध की मूर्त है। जैसेः

''दुर्गा माई के रूप देखलीं, सिंह पर बइठल, खप्पर लेलीं।''

(मैथिली देवी गीत संग्रह, सं. डॉ. विनोद मिश्रा, 2002)

यहाँ स्त्री स्वयं को देवी के रूप में देखती है, जो अन्याय के विरुद्ध शस्त्र उठा सकती है। यह एक प्रकार का सशक्तिकरण है, जो धार्मिक परंपरा से होकर सामाजिक चेतना में परिवर्तित होता है।

**आधुनिक स्त्री स्वर का प्रवेश**

पिछले कुछ वर्षों में कुछ लोकगायिकाओं द्वारा गाए गए गीतों में स्त्री चेतना और भी मुखर हुई है। जैसे गायिका शारदा सिन्हा द्वारा गाया गया यह मैथिली गीतः

''हम नारी छी, अब चुप नै रहब, अपन बात सबके कहब।''

(एल्बमः नारी जागरण, 2019)

यह स्पष्ट रूप से लोकगीतों की पारंपरिक भूमिका को चुनौती देता है और उसमें आधुनिक स्त्रीवादी भाषिक संरचना जोड़ता है।

**समकालीन स्वर और तुलनात्मक विश्लेषण**

लोकगीतों में नारी चेतना की चर्चा केवल अतीत की स्मृति नहीं है, बल्कि यह सतत विकासशील प्रक्रिया है जो आज भी मैथिली और भोजपुरी क्षेत्रों की स्त्रियों के सामाजिक, सांस्कृतिक और मानसिक जीवन को प्रभावित कर रही है। इस अंतिम खंड में, हम इस चेतना की समकालीन उपस्थिति, तुलनात्मक स्वरूप, और बदलते सामाजिक परिप्रेक्ष्य में उसके महत्व का विश्लेषण करेंगे।

**लोक परंपरा और आधुनिकता का संवाद**

बीते एक दशक में सामाजिक गतिशीलता, डिजिटल क्रांति और स्त्री शिक्षा के विस्तार ने लोकगीतों के स्वरों में उल्लेखनीय परिवर्तन लाया है। पारंपरिक गीत जहाँ विवाह, संतानोत्पत्ति और देवी–पूजन तक सीमित थे,

वहीं अब स्त्री–स्वर में रोजमर्रा की असमानता, घरेलू हिंसा, नौकरी, मोबाइल–स्वतंत्रता जैसे नए विषयों की झलक मिलने लगी है।

उदाहरणः 2020 में शिवचर्चा और सावनी लोकगीतों की शैली में रचित एक नया गीत वायरल हुआः

''मोबाइलवा दे दा राजा जी, हमरा भी फेसबुकिया देखे के मन करेला।''

यह गीत पारंपरिक धुन में होने के बावजूद आधुनिक स्त्री की डिजिटल आकांक्षा को दर्शाता है। यह केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि महिला की आत्म–अभिव्यक्ति की इच्छा है।

## भोजपुरी और मैथिली में नारी चेतनाः तुलनात्मक विवेचन

### सामाजिक संरचना में अंतर

मैथिली समाज अपेक्षाकृत अधिक शास्त्रीय परंपराओं से जुड़ा हुआ रहा है, जहाँ विद्यापति, कालीदास और लोकायतन परंपरा का प्रभाव रहा है। वहीं भोजपुरी समाज में अधिक कृषि–आधारित, संघर्षशील और प्रवासी अनुभवों की छाया है।

इसका सीधा प्रभाव नारी चेतना के स्वरूप पर पड़ा हैः

- मैथिली लोकगीतों में स्त्री की आवाज़ अधिक आभिजात्य, कोमल और सांस्कृतिक रूप से विन्यस्त होती है।
- भोजपुरी लोकगीतों में स्त्री की आवाज़ अधिक मुखर, विद्रोही और श्रमिक चेतना से युक्त दिखती है।

### विद्रोह की तीव्रता और व्यंजना

मैथिली में गारी गीत या बरहमासा में व्यथा नाटकीय शैली में आती है जैसेः

''बौआ जनमल, मोन हर्षित भेल, पुत्री जनमलि, चुप्पे रहली सभ।''

जबकि भोजपुरी में वही संवेदना अधिक सीधी ललकार में बदल जाती हैकृ

''काहे बिटिया के जनम पे छाती पीटेल, ऊहै त बुढ़ापा में तोहरा के रोटी देई।''

(स्रोतः भोजपुरी जनगीतों में स्त्री विमर्श, नीलू चतुर्वेदी, 2019)

### लोकगायकों की भूमिका

मैथिली में शारदा सिन्हा, कांति देवी, और तुलसी देवी जैसे लोकगायकों ने पारंपरिक गीतों को सहेजते हुए स्त्री–संवेदना को निखारा।

वहीं भोजपुरी में कल्पना पटवारी, देवो मुरारी जैसी गायिकाओं ने 'फेमिनिस्ट फोक' शैली को लोकप्रियता दिलाई, जिसमें विवाह विरोध, घरेलू हिंसा और स्त्री–श्रम जैसे विषय प्रमुख रहे।

### मीडिया और मंच पर लोक स्त्रियों की वाणी

टीवी, यूट्यूब और सोशल मीडिया ने इन दोनों लोकगीत परंपराओं को नए श्रोताओं तक पहुँचाया है। इसमें मैथिली लोकगीत अधिक संरक्षणवादी ढंग से मंच पर आए, जबकि भोजपुरी गीतों में एक दोहरी प्रवृत्ति देखी गई एक ओर स्त्री सशक्तिकरण के गीत, दूसरी ओर अश्लीलता से घिरे महिला–विरोधी स्वर।

इस विरोधाभास के बीच से एक तीसरी धारा निकली जिसमें लोकगीतों का उपयोग प्रेरक स्त्री चरित्रों को प्रस्तुत करने के लिए किया गया। जैसेः

''सीता नहीं अब सीधी नहीं'' (भोजपुरी मंच गीत, 2021)

''हम नारी छी, आवाज़ देब'' (मैथिली एल्बम, 2020)

इन गीतों में नारी चेतना आज के सामाजिक संदर्भों से जुड़ती है वह अब देवी या दासी नहीं, बराबरी का अधिकार माँगने वाली 'नागरिक' बनती है।

भविष्य की ओर संकेतः क्या लोकगीत नारीवादी साहित्य का नया स्रोत हैं?

नारीवादी आलोचना का क्षेत्र अब केवल कथा–साहित्य तक सीमित नहीं, वह लोक की वाणी में भी अपना स्थान तलाश रहा है। मैथिली और भोजपुरी लोकगीतों में छिपी ये आवाजें जिन्हें अब तक 'संवेदना' या 'अनुभव' भर माना गया आज 'राजनीतिक' और 'सांस्कृतिक प्रतिरोध' के दस्तावेज़ बन रही हैं।

अतः यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है किः

- लोकगीत स्त्री के लिए न केवल वाणी हैं, बल्कि याददाश्त, प्रतिरोध और स्वप्न का माध्यम हैं।
- मैथिली और भोजपुरी की यह लोक परंपरा स्त्री विमर्श को एक देशज, आत्मीय और जीवंत आयाम प्रदान करती है।

## निष्कर्ष

आलेख ने यह सिद्ध किया कि मैथिली और भोजपुरी लोकगीतों में नारी चेतना एक स्थायी, विकसित होती और विविधवर्णी धारा है। वह न केवल सामाजिक संरचना का प्रतिविम्ब है, बल्कि उसे बदलने वाली अंतर्धारा भी है। यदि लोक ही भारत का सबसे बड़ा सामाजिक दस्तावेज़ है, तो ये गीत उसके हाशिए पर पड़ी स्त्रियों की सबसे मुखर आवाज़ हैं जो आज भी गूंज रही हैं, कभी विदाई में रोती, कभी गारी में हँसती, कभी सावन में तड़पती और कभी दुर्गा बन शेर पर सवार होती।

## सन्दर्भ ग्रन्थ सूची


1. झा, उषा (2015). Women in Maithili Folklore. *मिथिला अकादमी पब्लिकेशन, दरभंगा.*
2. चतुर्वेदी, नीलू (2019). भोजपुरी जनगीतों में स्त्री विमर्श. *जन संस्कृति प्रकाशन, वाराणसी.*
3. सिंह, अणिमा (2024). मैथिली लोकगीतः परंपरा और परिवर्तन. *प्रभात पब्लिशिंग, पटना.*
4. श्रीश, डॉ. दुर्गानाथ झा (1991). मैथिली साहित्यिक इतिहास. *विद्यापति संस्थान, समस्तीपुर.*
5. झा, विद्यानाथ (2010). मैथिली लोकगीतः सामाजिक और सांस्कृतिक अध्ययन. *कालजयी पब्लिकेशन, दरभंगा.*
6. झा, रामदेव (1982). मैथिली लोकसाहित्यः स्वरूप और सौंदर्य. *मिथिला शोध प्रतिष्ठान, मधुबनी.*
7. पटवारी, कल्पना (2022). Folk Feminism in Bhojpuri Music *साक्षात्कार आधारित शोध प्रस्तुति, गुवाहाटी विश्वविद्यालय.*
8. सिन्हा, शारदा (1990–2000). लोक गायन रिकॉर्डिंग संग्रह. *व्यक्तिगत साक्षात्कार और आकाशवाणी पटना अभिलेख.*
9. चौधरी, अनिल (2021). लोक मीडिया और महिला प्रतिरोध. *दिल्ली विश्वविद्यालय शोध पत्रिका, खंड 12(4), पृ. 87–104।*
10. मिश्रा, रश्मि (2023). सोशल मीडिया और स्त्री लोकवाणी. *हिंदी अकादमी, दिल्ली.*


♦❐♦